कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

A comparative study of working and non working women's decision making ability

डॉ.यतीन कुमार चौबीसा

सहायक आचार्य(शिक्षा संकाय)

विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान रामगिरी, बड़गांव, उदयपुर, राजस्थान

शोध सारांश

विकसित भारत के निर्माण हेतु महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में प्रस्तुत शोध का उद्देश्य कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन कार्य में राजस्थान राज्य के उदयपुर शहर में रहने वाली 50 कामकाजी एवं 50 गैर कामकाजी सहित कुल 100 महिलाओं को सम्मिलित किया गया। महिलाओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता का पता लगाने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में सांख्यिकी प्रविधि के रूप में टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम से पता चलता हैं कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता में अंतर है । कामकाजी महिलाओं की निर्णय लेने के प्रति क्षमता गैर कामकाजी महिलाओं से बेहतर एवं अधिक देखी गई है।

की वर्ड: कामकाजी महिला, गैर कामकाजी महिला एवं निर्णय लेने की क्षमता।

प्रस्तावना

प्राचीन भारत से विकसित भारत की यात्रा में सभी वर्गों एवं समूह का योगदान अत्यंत आवश्यक है । निम्न वर्ग से उच्च वर्ग, भेदभाव रहित जेंडर समूह की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है । कई क्षेत्रों में आज भी महिलाओं की स्थिति सशक्त रूप में नहीं देखी गई है । उन्हें संवैधानिक आधार पर कानूनी समानता का दर्जा तो मिला है लेकिन सामाजिक , पारिवारिक एवं सामुदायिक स्तर पर समानता का अभाव देखा गया है । विकसित भारत की संकल्पना में महिला सशक्तिकरण का होना एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है । महिला सशक्तिकरण की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 8 मार्च 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस से मानी जाती है। फिर महिला सशक्तिकरण

की पहल 1985 में महिला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन नैरोबी में की गई। महिला सशक्तिकरण का राष्ट्रीय उद्देश्य महिलाओं की प्रगति और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना है । महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत महिलाओं से जुड़े सामाजिक ,आर्थिक ,राजनीतिक और कानूनी मुद्दों पर मुख्य रूप से संवेदनशीलता और सरोकार व्यक्त किया जाता है ।पारिवारिक स्तर पर महिलाओं के सम्मान ,आत्मविश्वास एवं निर्णय लेने के प्रति जिम्मेदारी का संवर्धन अत्यंत आवश्यक है ।पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों में महिलाओं की भूमिका का बढ़ाना उनकी जागरूकता एवं समाज के प्रति जिम्मेदारी को दर्शाता है। महिलाओं की घरेलू कार्यों से बाहरी कार्यों की ओर बढ़ना उनके आत्मविश्वास को प्रभावित करता है। महिलाओं की सह भागीदारी एवं जागरूकता विकसित भारत के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है ।

इन्हीं मुख्य उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता के प्रति अध्ययन करने का विचार शोधार्थी के मन में उत्पन्न हुआ । मूल प्रश्न यह है कि क्या महिलाएं अपने समस्त प्रकार के निर्णय को स्वयं लेने में सक्षम है? इस प्रश्न का पता लगाने के लिए शोधार्थी ने एक पायलट सर्वे कार्य करने का विचार किया । इस सर्वे कार्य के माध्यम से प्राप्त होने वाले निष्कर्ष के आधार पर महिलाओं के विभिन्न प्रकार के क्षेत्र से संबंधित शोध कार्य को पूर्ण करने में मदद मिल सकेगी । उनके इन निष्कर्ष से राष्ट्रीय महत्व को बेहतर बनाते हुए विकसित भारत के निर्माण में योगदान दिया जा सकता है।

साहित्यावलोकन

हामिद वासिया एट ऑल ने (2021) में कश्मीर की गुर्जर महिलाओं की स्वायत्तता एवं निर्णय क्षमता योग्यता- बडगाम जिले की खान साहब तहसील के संदर्भ में अध्ययन कार्य किया। उनके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य आदिवासी महिलाओं के निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी के स्तर का पता लगाना था। साथ ही उन कारकों का भी पता करना था जो उनकी भागीदारी के स्तर को प्रभावित करती हैं । इनके अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि आदिवासी महिलाओं का निर्णय लेने का अधिकार केवल छोटे घरेलू मुद्दों तक ही सीमित था। परिवार के आकार, प्रकार, आयु, शिक्षा का स्तर, रोजगार की स्थिति और निर्णय लेने में आदिवासी महिलाओं की भागीदारी के बीच एक महत्वपूर्ण सह संबंध देखा गया। **खरे शिखा ने (2021)** में महिलाओं का उनके बच्चों के संदर्भ में निर्णय लेने संबंधी योग्यता पर महिला शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन विषय पर कार्य किया। उनके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बच्चों के संदर्भ में महिलाओं के द्वारा निर्णय लेने पर शिक्षा क्या प्रभाव पड़ता है उसको मापना था । उनके निष्कर्ष से पता चलता है कि शिक्षित समूह के उत्तरदाताओं में निर्णय लेने का उच्च और

मध्यम स्तर था जबकि अशिक्षित समूह के कुछ उत्तरदाता ही निर्णय लेने की शक्ति का प्रयोग करते थे । साथ ही शिक्षा से सशक्त होने पर महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता भी बढ़ती हुई देखी गई है । महिलाओं के अशिक्षित समूह में हस्तक्षेप करते हुए भी देखा गया है । **मिश्रा ऋचा ने (2021)** में महिला सशक्तिकरण के रूप में योगदान के लिए निर्णय लेना- भारतीय संदर्भ में अध्ययन जैसे विषय पर अपना अध्ययन कार्य किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महिलाओं का सामाजिक कार्यों एवं उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता के संदर्भ में निर्णय लेने की स्थिति का पता लगाना था । **मैक्सवेल मगन एवं वैष्णव मिलन ने (2021)** में कामकाजी महिलाओं का घर पर निर्णय लेने की शक्ति विषय पर अपना अध्ययन कार्य किया। उनके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या कामकाजी महिलाएं घर पर निर्णय लेने की क्षमताएं रखती हैं ? इनके अध्ययन निष्कर्ष से पता चलता है कि जो महिलाएं कामकाजी होती है वह घर के महत्वपूर्ण निर्णय को लेने में अधिक अंतक्रिया करते हुए बोलते हैं।**नामदेव आर. पुष्पा ने (2017)** में महिलाओं के निर्णय लेने की योग्यता पर शिक्षा का प्रभाव विषय पर अध्ययन कार्य किया । उनके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के द्वारा निर्णय लेने पर शिक्षा के प्रभाव का पता लगाना था । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षित महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता तथा योग्यता गैर शिक्षित महिलाओं से अधिक थी । कामकाजी शिक्षित महिलाओं की निर्णय योग्यता गैर कामकाजी शिक्षित महिलाओं से बेहतर देखी गई।

उपर्युक्त साहित्य का अवलोकन करने से पता चलता है कि महिलाओं के निर्णय लेने की योग्यता के संदर्भ में कुछ विषयों पर कार्य हुआ है जिसके अंतर्गत घरेलू विषय पर निर्णय लेना, महिलाओं की स्वायत्तता संबंधी निर्णय लेना ,निर्णय लेने पर शिक्षा का प्रभाव, बच्चों की देखभाल संबंधी विषय पर निर्णय लेना एवं महिला सशक्तिकरण संबंधी मुद्दों पर निर्णय प्रदान करना जैसे प्रमुख हैं। लेकिन आर्थिक ,राजनीतिक ,सामाजिक , जनकल्याण , योजना निर्माण, आत्मविश्वास ,मनोरंजन एवं पारिवारिक मुद्दों पर समग्र रूप से निर्णय लेने में महिलाओं की क्या स्थिति रहती है इस विषय पर राजस्थान राज्य के उदयपुर शहर में कोई शोध कार्य नहीं हुआ है । अतः इन सभी क्षेत्र से संबंधित निर्णय लेने के लिए विभिन्न पदों का निर्माण कर इस विषय पर पायलट सर्वे के रूप में एक अध्ययन कार्य करने का निश्चय किया गया है। इसके माध्यम से महिलाओं की निर्णय लेने के प्रति क्षमता को देखा जा सके । इस शोध के माध्यम से प्राप्त परिणाम के आधार पर भविष्य में इस विषय से संबंधित अन्य प्रकार के शोध प्रबंध कार्य को करने में विभिन्न सुझाव एवं दिशा प्राप्त हो सकेगी। साथ ही विकसित भारत के निर्माण में महिलाओं की सशक्तिकरण संबंधी स्थिति से अवगत होने में मदद मिल सकेगी।

उद्देश्य

- कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

- कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इस पायलट सर्वे कार्य के अंतर्गत महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता का पता लगाने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में आर्थिक ,राजनीतिक ,सामाजिक , जनकल्याण , योजना निर्माण, आत्मविश्वास ,मनोरंजन एवं पारिवारिक मुद्दों संबंधी पदों का निर्माण कर प्रदतों का संकलन किया गया। इस हेतु राजस्थान के उदयपुर शहर की 50 कामकाजी एवं 50 गैर कामकाजी सहित कुल 100 महिलाओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रदत्तों का संकलन गूगल फॉर्म के माध्यम से किया गया। अध्ययन में सांख्यिकी विश्लेषण के रूप में टी- परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रदतों का विश्लेषण व व्याख्या

प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत प्रदत्तों का संकलन करने हेतु कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं से निर्णय लेने की क्षमता आधारित प्रश्नावली को भरवारा गया। प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर उसका विश्लेषण व व्याख्या निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत है -

सारणी क्रमांक 1

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता संबंधित प्रदत्तों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी- मूल्य

समूह	कामकाजी			गैर कामकाजी			मध्यमान अंतर	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन			

महिला	50	15.16	2.92	50	13.32	2.78	1.84	3.28	.01 एवं .05 स्तर

(df-98, टी - मूल्य .05=1.98, .01=2.63)

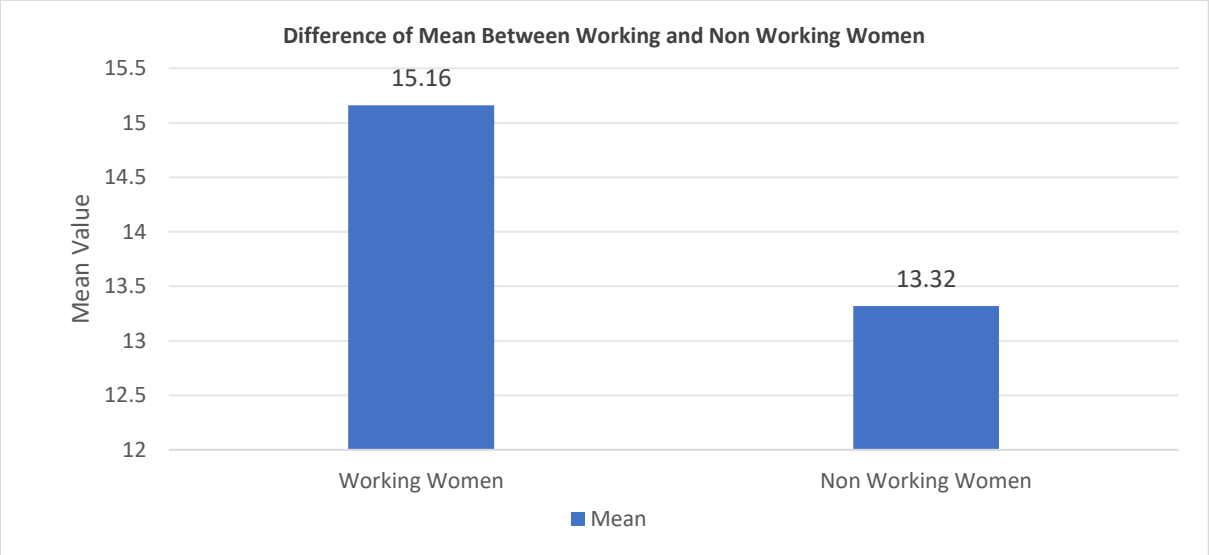

आरेख क्रमांक 1

कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता संबंधित प्रदत्तों का मध्यमान

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी व आरेख क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता संबंधित प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 15.16 एवं 13.32 है। इनका मानक विचलन भी क्रमश 2.92 एवं 2.78 है। दोनों समूह की महिलाओं के प्रदत्तों के मध्य 'टी ' मूल्य 3.28 है जो कि 98 df पर 0.05 एवं 0.01 स्तर के दोनों विश्वसनीय स्तरों के परिकलित मान क्रमशः 1.98 एवं 2.63 से अधिक है

।अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए हम परिणाम रूप में यह कह सकते हैं कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया है ।

परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन कार्य के परिणाम रूप में यह कह सकते हैं कि कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता में अंतर है । कामकाजी महिलाओं की निर्णय लेने के प्रति क्षमता गैर कामकाजी महिलाओं से बेहतर एवं अधिक देखी गई है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से पता चलता है कि कामकाजी महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता गैर कामकाजी महिलाओं से श्रेष्ठ है । इस योग्यता की वजह से उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि देखी जाती है ।अतः नौकरी ,पेशा, व्यवसाय से संबंधित महिलाएं अपने निर्णय को लेने में स्वायत्ता महसूस करती है। यह उनके विभिन्न प्रकार के क्षेत्र में निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होती है। अतः इस प्रकार महिलाओं की निर्णयन क्षमता, उन्हें सशक्त बनाते हुए विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

References:

- Bhandari,Sunanda(2015):'Mahila Sashaktikaran evam Rajkiya Yojnae', Jaipur,Ritu Publications.
- Dave,V.Deepika(2014):' 21 Vi Sadi me Mahila Sashaktikaran',New Delhi,Rawat Prakashan.
- Gupta, S.P. (2003): "Sankhikiya Vidhiya (Statistical Methods)", Allahabad, Sharda Pushtak Bhawan.
- Agrawal, J.C. (2002): "Educational Research", New Delhi, Arya Book Depot.
- Bhatnagar, Suresh (1995): "Shiksha Manovigyan", Meerut, R.Lal Book Depot.
- Garret, Henory E. (1972): "Shiksha va Manovigyan me Sankhiyki, Ludhiyana, Kalyani Publishars.

- Hamid Wasia et. all (2021): 'Autonomy and Decision-making Ability among Gujjar Women of Kashmir: A Study of Khan Sahib Tehsil in District Budgam', Indian Journal of Gender Studies, Volume 28, Issue 1, Pages: 90 – 103,from https://journals.sagepub.com/doi/full/10.1177/0971521520974869

- Namdeo,R.Pushpa(2017):'Impact of Education on Decision Making Ability of Women',Educational Quest-An International Journal of Eduction and Applied Social Sciences,Volume 8,Issue- Spl,P-ISSN:0976-7258,Online ISSN-2230-7311,Page431-434,from,https://www.indianjournals.com/ijor.aspx?target=ijor:eq&volume=8&issue=spl&article=033

- Khare, Shikha(2021):' Impact of Women's Education on Decision Making Regarding Their Children Affairs', Journal of Scientific Research Institute of Science, , Banaras Hindu University, Varanasi, India.Volume 65, Issue 1, from https://www.bhu.ac.in/research_pub/jsr/Volumes/JSR_65_04_2021/24.pdf

- Mishra Richa et.all(2021):' Decision Making as a Contributor for Women Empowerment: A Study in the Indian Context, Journal of Comparative Asian Development,Volume18,Issue(1),Page79-99,from,https://www.researchgate.net/publication/352418722_Decision_Making_as_a_Contributor_for_Women_Empowerment_A_Study_in_the_Indian_Context

- Maxwell, Megan and Vaishnav, Milan (2021):'Working Women's Decision-Making Power at Home: Evidence from Four North Indian Urban Clusters',Urbanisation,Volume 6, Issue 1_suppl,Pages: S58 - S76,from,https://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1177/24557471211025891?journalCode=urba